

<?xml version="1.0" ?>

<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>

<Doc id="hin-w-media-HN00002" lang="Hindi">

<Header type="text">

<encodingDesc>

<projectDesc> CIIL-KHS Hindi Corpora, Monolingual Written Text </projectDesc>

<samplingDesc> Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures, tables and verses have been omitted. Samples taken from page 51, 100-101, 150-152, 201, 250-252, 301, 351-352, 400-402, 500-501

</samplingDesc>

</encodingDesc>

<sourceDesc>

<biblStruct>

<source>

<category> Aesthetics </category>

<subcategory> Literature-Novels </subcategory>

<text> Book </text>

<title> cOTI sl shuruAta </title>

<vol> </vol>

<issue> </issue>

</source>

<textDes>

<type> </type>

<headline> </headline>

<author> bhairava prasAda gupta </author>

<words> 4038 </words>

</textDes>

<imprint>

<pubPlace> India-Delhi </pubPlace>

<publisher> IOkabhAratl prakAshana </publisher>

<pubDate> 1997</pubDate>

</imprint>

<idno type="CILL code"> 71727 </idno>

<index> HN00002 </index>

</biblStruct>

</sourceDesc>

<profileDesc>

<creation>

<date> 9-May-2005 </date>

<inputter> Ayesha </inputter>

<proof> Meena, Jitendra </proof>

</creation>

<langUsage> Hindi </langUsage>

<wsdUsage>

<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>

</wsdUsage>

<textClass>

<channel mode="w"> print </channel>

<domain type="public"> </domain>

</textClass>

</profileDesc>

</Header>

<text><body>

<p>—अभी तक नहीं कहा,—आफताब ने बताया—वे ख्वाब देख रहे हैं कि बी० ए० पास करने के बाद मैं आई० ए० एस० और पी० सी० एस० की प्रतियोगिता में बैठूंगा। उन्हें क्या मालूम कि मेरे-जैसे मामूली विद्यार्थी आई० ए० एस० या पी० सी० एस० की धूल भी नहीं छू सकते। हां, एक बात तुम्हें बताऊं? </p>

<p>—बताओ,—सरल ने कहा—तुम्हें अचानक क्या याद आ गया? </p>

<p>—यह कि तुम्हारे बड़े भैया को तो तुम्हारा जीवन बनाने की कोई परवाह ही नहीं—आफताब ने बताया—और उधर बड़े महाजन मुखिया इस कारण परेशान हैं कि उनके बेटे काशीनाथ की आयु बी० ए० पास करते तेईस बरस हो जाएगी, तब वह आई० ए० एस० में कैसे बैठेगा?

उसे इक्कीस वर्ष की आयु में बी0 ए0 पास कर लेना चाहिए। यह तब है, जब उसने हाईस्कूल द्वितीय श्रेणी में पास किया है। वह तुम्हारे ही साथ तो पढ़ रहा था? </p>

<p>—हां,—सरल ने बताया। फिर पूछा—वह भी यहां पढ़ने आया है क्या? </p>

<p>—नहीं,—आफताब ने बताया एक दिन बड़े महाजन मेरे अब्बा के पास आये थे। पूछ रहे थे कि काशी की उम्र कैसे कम हो सकती है। कोई तरकीब मालूम हो तो बताएं, जो भी खर्च होगा, वे देंगे। अब्बा ने कहा, मैं इस काम में आपकी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा। मुझे तो यही मालूम है कि गजट हो जाने के बाद उम्र पक्की हो जाती है, उसमें कोई तब्दीली नहीं हो सकती। इस पर बड़े महाजन ने कहा, क्या बताएं, पहले इसका ध्यान ही नहीं रहा। फिर उन्होंने मुझसे पूछा, क्यों, बाबू, तुम तो इलाहाबाद में पढ़ते हो, तुम्हें कुछ मालूम है? मैंने सिर हिलाकर बताया, नहीं; मुझे नहीं मालूम। शायद कोई वकील आपको कुछ बता सकें। यों, काशी बाबू आगे की पढ़ाई कहां करेंगे? उन्होंने जवाब दिया हिन्दू विश्वविद्यालय में उसने फार्म भेज दिया है। क्या बताएं, यह आयु का चक्कर बीच में पड़ गया। खैर कल मैं किसी को सदर भेजता हूं। वहां शायद, कुछ पता चले। क्यों, सरल, तुम्हारी आयु इस समय क्या है? </p>

<p>—छोड़ो, यार, यह बात! —सरल ने कह दिया—जिस गांव नहीं जाना, उस गांव का रास्ता क्या पूछना। वे बड़े लोग हैं, उनका सपना बड़ा है। बड़े भैया छोटे आदमी हैं, उनका सपना छोटा है। अफसोस तो मुझे यह है कि मैं उनका छोटा सपना भी पूरा नहीं कर पा रहा हूं।</p>

<p>—अब तुमने हाईस्कूल पास कर लिया है,—आफताब ने कहा—अब कितनी ही नौकरियों के द्वार तुम्हारे लिए खुल गये हैं। खुदा ने चाहा, तो तुम जरूर किसी में घुस जाओगे।</p>

<p>—तुम्हारे खुदा यह चाहें,—सरल ने कहा—क्या इसकी भी कोई तरकीब तुम्हें मालूम है? </p>

<p>—मालूम तो है,—आफताब ने बताया।</p>

<p>—भला वह क्या है?—सरल ने मुस्कराकर पूछा—वह भी बता दो।</p>

<p>—दुआ करना,—आफताब ने कहा—लेकिन मैं तो दुआ नहीं करूंगा।</p>

<p>—तो क्या तुम समझते हो, मैं दुआ करूंगा?—सरल की मुस्कराहट चौड़ी हो गयी। यार, तुम मेरे दोस्त हो, मेरे लिए, दुआ भी नहीं कर सकते? </p>

<p>हाथ का लिफाफा दिखाते हुए दारोगा ने बताया—अर्जी वगैरा तैयार है। मैं चाहता था कि आज ही यह काम हो जाता।</p>

<p>—हो जाएगा,—जे0सी0एम0 ने कहा—तुम कचहरी आओगे न? </p>

<p>—जी,—दारोगा ने बताया—मुजरिम को लेकर आऊंगा।</p>

<p>—तो उससे फुरसत पाकर मुझसे मिलना,—जे0सी0एम0 ने उठते हुए कहा—तुम बैठक में दो मिनट बैठो। मैं कपड़े पहनकर आता हूँ।</p>

<p>जे0सी0एम0 तैयार होकर बैठक में आकर सोफे पर बैठ गये, तो दारोगा ने पूछा—आप लड़के से कुछ पूछना चाहेंगे? </p>

<p>—कहाँ है वह?—जे0सी0एम0 ने पूछा।</p>

<p>—बाहर बेंच पर बैठा है,—दारोगा ने बताकर पूछा—उसे बुलाऊं? </p>

<p>—अभी रुको, तुम्हारी ममानी आ रही हैं, जे0सी0एम0 ने कह दिया। बाहर सिर पर फीतेदार लाल पगड़ी, सफेद अंगरखे के ऊपर कमर में हरा पट्टा बांधे और कन्धे से चपरास लटकाये एक चपरासी सीढ़िया चढ़कर बरामदे में आ खड़ा हुआ। सरल और आफताब ने उसकी ओर देखा, वह उन्हें घूरकर देख रहा था।</p>

<p>—आप लोग कौन हैं, कोई केस है क्या आप लोगों का? उनके पास आ चपरासी ने पूछा।</p>

<p>—नहीं,—आफताब ने बताया।</p>

<p>—तो जे0सी0एम0 साहब से कोई काम है?—चपरासी ने दूसरा सवाल किया। चिढ़कर आफताब ने कहा—क्या कोई बिना किसी काम के किसी के यहां आता है? </p>

<p>—तो क्या काम है, आप मुझे बताइए,—चपरासी ने कहा—मैं उनका चपरासी हूँ। मैं आप लोगों को तुरन्त उनसे मिलवा दूंगा। वरना उनके कचहरी जाने का समय हो गया है। आप लोग बैठे रह जाएंगे। एक रुपये की तो बात है।</p>

<p>तभी खानसामे ने एक बस्ता लाकर चपरासी को पकड़ाकर कहा—तुम कचहरी चलो, साहब आ जाएंगे। अभी मेहमान से बात कर रहे हैं।</p>

<p>खानसामा अन्दर चला गया, तो चपरासी ने फिर कहा—क्या कहते हैं आप लोग? </p>

<p>—तुम चलो,—आफताब ने कह दिया—हम कचहरी में तुमसे मिलेंगे।</p>

<p>—तो मेरी बोहनी तो करा दीजिए,—चपरासी ने हाथ बढ़ाकर कहा—मैं कचहरी में तुरन्त साहब से मिलवा दूंगा।</p>

<p>—अरे, जाओ, जाओ।—आफताब ने कह दिया—कचहरी में बोहनी तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी।</p>

<p>चपरासी मुंह बनाकर चला गया। आफताब हंसने को होकर भी न हंस सका। सरल चुप, शान्त बैठा रहा।</p>

<p>अन्दर बैठक में बेगम तश्तरी में पान की गिलौरियां, डिबियों में जर्दा, छोटी इलायची, लौंग और सौंफ लेकर आर्यीं। दारोगा ने खड़े होकर उन्हें सलाम किया।</p>

<p>—खुश रहो।—बेगम ने कहा—खानसामा बता रहा था, तुमने नाश्ता नहीं किया। क्या खाकर चले थे? </p>

<p>—क्या खाना-पीना, ममानी?—दारोगा ने कहा—ऐसी गर्मी पड़ रही है कि ठंडे पानी के सिवा कुछ रुचता नहीं।</p>

<p>—विश्वविद्यालयों में यह एक स्वयंसिद्ध बात की तरह हो गया है,—आफताब ने बताया—जब किसी कक्षा में किसी विद्यार्थी और किसी प्रोफेसर के पुत्र या पुत्री विद्यार्थी के बीच टाप करने की प्रतिद्वन्द्विता होती है, तो देखा गया है कि प्रोफेसर के पुत्र या पुत्री—विद्यार्थी फाइनल में बाजी मार ले जाता है।</p>

<p>—लेकिन कैसे?—फिर भी सरल की समझ में न आ रहा था कि यह कैसे हो सकता है।</p>

<p>—ऐसे,—आफताब ने बताया—सभी यूनिवर्सिटियों के प्रोफेसरों में मिली-भगत होती है। आखिर प्रश्न प्रोफेसर ही बनाते हैं और उत्तर-कापियों की जंचाई भी वही तो करते हैं। अब कुछ समझ में आया? </p>

<p>—ओह।—चकित होकर सरल बोला—तो प्रोफेसर अपने बेटे-बेटी को प्रश्नों को बता देते हैं अथवा उत्तर-की जंचाई के समय मनमाने अंक दे देते हैं? </p>

<p>—हां,—आफताब ने बताया—ऐसा ही कुछ होता है।</p>

<p>—तो प्रोफेसर भी बेईमानी करते हैं?—सरल ने पूछा।</p>

<p>—नहीं करते तो ऐसा क्यों मान लिया जाता कि प्रोफेसर का बेटा या बेटी ही टाप करेंगे?—आफताब ने बताया—कभी-कभी तो संयोगवश किसी विद्यार्थी और प्रोफेसर के बेटे या बेटी के एम0ए0 के प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्राप्त अंकों में इतनी सन्निकटता होती है कि सोचना कठिन हो जाता है कि फाइनल परीक्षा में कौन किसको मात दे देगा। लेकिन जब

फाइनल परीक्षा का परिणाम सामने आता है, तो देखा जाता है कि प्रोफेसर के बेटे या बेटी ने ही अन्ततः बाजी मार ली, जब कि विद्यार्थी के प्रथम वर्ष में प्राप्त अंक प्रोफेसर के बेटे या बेटी के प्राप्त अंकों से दो-तीन प्रतिशत अधिक थे। यही-सब देखकर अक्सर संभावित टापर विद्यार्थी उस वर्ष फाइनल परीक्षा ड्राप कर देता है, जिस वर्ष उसका प्रतिद्वन्द्वी कोई प्रोफेसर का बेटा या बेटी होता है।</p></div>

<p>—वह एक वर्ष बरबाद कर देता है?—सरल ने अफसोस के साथ पूछा।</p></div>

<p>—हां,—आफताब ने बताया—उसके शानदार कैरियर पर दाग लगे, इससे बेहतर वह एक साल बरबाद कर देना अच्छा समझता है। उसे विश्वास रहता है कि मैदान साफ रहेगा, तो निश्चय ही दौड़ जीत लेगा।</p></div>

<p>—वाह रे प्रोफेसर लोगों। धन्य हो तुम भी,—सरल ने कहा—यह जानकारियां तुम्हें कैसे प्राप्त हुईं? </p></div>

<p>—हमारी माडर्न हिस्ट्री की कक्षा में इतिहास-विभाग के एक प्रोफेसर की एक पुत्री भी है,—आफताब ने बताया—उसी के सम्बन्ध में बातें होने पर ये जानकारियां मिलीं। है वह सेकण्ड-क्लासर, लेकिन अभी से लड़के उसे देखकर फब्टी कसते हैं, ये जा रही हैं, एक भावी टापर! विश्वविद्यालय में कई विभागों में एक साथ ही बाप भी प्रोफेसर हैं, भाई, बेटा या बेटी या पुत्र-वधू भी प्रोफेसर हैं। विद्यार्थियों में उन्हें लेकर बातें चलती रहती हैं। अब तुम्हीं बताओ, ऐसा कैसे होता है? </p></div>

<p>—इसका मतलब तो यह हुआ,—सरल ने कहा—कि तुम बार-बार मुझे सब्ज-बाग दिखाते रहते हो, वह भी वैसा सब्ज नहीं है।</p></div>

<p>—फिर भी सब्ज तो है,—आफताब ने कहा—और महकमों से तो बेहतर माना जाता है।</p></div>

<p>—जो प्रोफेसर बेईमानी करके अपने सगे-सम्बन्धियों के अंक बढ़वा सकते हैं,—सरल ने पूछा—क्या वे दूसरे विद्यार्थियों के अभिभावकों से रिश्वत लेकर उनके अंक नहीं बढ़ा-बढ़वा सकते हैं? </p></div>

<p>कविताओं का एक संग्रह डाक्टर एकिंस ने स्वयं उसे पढ़ने को दिया था। हिवटमैन की कविताएं उसे बहुत अच्छी लगी थीं। उन्हें उसने बार-बार पढ़ा था और तीन कविताओं के तो उसने हिन्दी में अनुवाद भी किये थे। वे उसे याद हो गयी थीं। एक कविता में हिवटमैन अमेरिका से कहते हैं—</p></div>

<p>हजारों वर्षों की उठान, जिससे तुम वंचित रहे हो, </p></div>

<p>में देख रहा हूं, वह निश्चित रूप में आने वाली है</p>

<p>हम-सबका, सामान्य प्रकार से जाति का उठान सम्पूर्ण होगा।</p>

<p>आखिर वह नया समाज, प्रकृति के अनुरूप.... </p>

<p>में देख रहा हूं—</p>

<p>व्यापक मानवता के लिए जमीन साफ हो रही है।</p>

<p>सच्चा अमेरिका, शानदार अतीत का उत्तराधिकारी</p>

<p>महान भविष्य का निर्माण करने वाला है।</p>

<p>एक दूसरी कविता—</p>

<p>पवित्र एशिया के प्रति जो सबकी मां है, </p>

<p>अब सावधानी से व्यवहार करो</p>

<p>और अधिक उष्णता का अनुभव करो! </p>

<p>उस दूर की मां के प्रति, जो द्वीप-समूहों के ऊपर से</p>

<p>नये सन्देश भेज रही है, </p>

<p>अपने गर्वीले शीश को नत करो, </p>

<p>एक बार तो अपना शीश नत करो.... </p>

<p>तभी बन्द दरवाजे से टक-टक की आवाज आयी। सरल ने दरवाजा खोला, तो देखा, सादिक अली साहब खड़े थे। उन्हें आदाब कर सरल ने कहा—आइए।</p>

<p>—आप आये हुए हैं और मुझे पता ही नहीं,—सादिक अली साहब ने कहा।</p>

<p>—एक जरूरी काम कर रहा था,—सरल ने बताया—आफताब साहब की परीक्षा अभी चल रही है।</p>

<p>तभी आफताब ने भी दरवाजे पर आकर उन्हें आदाब कर कहा—कल मेरा पेपर है। इनका तो रेजल्ट भी मिल गया।</p>

<p>कैसा रहा?—सादिक अली साहब ने पूछा।</p>

<p>बहुत-बहुत अच्छा!—आफताब ने ही बताया—कल सुबह ये अकेले रहेंगे। आपसे मिलेंगे। क्यों?—कहकर उसने सरल की ओर देखा।</p>

<p>लेकिन सरल कुछ कहे, इसके पहले ही सादिक अली साहब ने बताया—कल तो मैं सुबह ही स्वराज भवन चला जाऊंगा। एक जरूरी मीटिंग है। हां, शाम को खाली रहूंगा। ठीक है?</p>

<p>सरल ने सिर हिलाकर हां कर दी।</p>

<p>अच्छा, आफताब साहब, आप पढ़िए—सादिक अली साहब ने कहा—और साहब, आप दो मिनट के लिए मेरे साथ आइए।</p>

<p>तब डायरेक्टर ने मैनेजर से कहा—एक बोतल ब्लैक एंड-ट्वाइट और आठ-दस बोतल सोडा भी मंगवा लीजिएगा।</p>

<p>ठीक है,—मैनेजर ने मुस्कराते हुए कह दिया।</p>

<p>मेरे लिए और कोई खास खिदमत?—चपरासी ने दोनों हाथ जोड़कर डायरेक्टर से पूछा।</p>

<p>नहीं, आज नहीं, कल,—डायरेक्टर ने कहा—कल डिनर पर पुलिस सुपरिटेण्डेंट आने वाले हैं।</p>

<p>सरल कुछ न समझा।</p>

<p>तब सभी लोग उठकर बिल्डिंग देखने निकल पड़े।</p>

<p>डायरेक्टर को देखते ही सभी मिस्त्री-मजदूर आगे आकर कतार में खड़े हो गये। सुपरवाइजर ने डायरेक्टर का स्वागत किया। डायरेक्टर ने सामने सिर उठाकर देखा और हेड मिस्त्री से पूछा—छत डालने का काम कब तक पूरा हो जाएगा।</p>

<p>दो दिन में तैयारी कर तीसरे दिन-बिरात तक छत पड़ जाएगी,—हेड मिस्त्री ने बताया।</p>

<p>—उसके कितने दिन बाद प्रोजेक्टर-रूम में हाथ लगाओगे?—डायरेक्टर ने अगला सवाल किया।</p>

<p>—आप तो जानते ही होंगे,—हेड मिस्त्री ने बताया—कम-से-कम आठ दिन छत पर पानी डाला जाएगा। फिर काम शुरू होगा।</p>

<p>—तो आठ दिन में तुम बाउंड्री बना डालना,—डायरेक्टर ने कहा—ध्यान रखना सामने दो गेट रहेंगे, एक अन्दर आने के लिए दूसरा बाहर निकलने के लिए। गेट इतने बड़े-बड़े हों कि ट्रक-लारी आसानी से आ-जा सकें।—कहकर उसने सुपारवाइजर से कहा—तुम नक्शा देखकर इसे ठीक से समझा देना। बाउंड्री की दीवारें आठ फुट ऊंची होंगी और—अन्दर घुसकर, चारों दीवारों को देखकर वह बोला—ठीक है। आगे के बारे में फिर आऊंगा, तो बताऊंगा। जैसे भी हो, अगले महीने हाल का काम पूरा हो जाना चाहिए। जुलाई के शुरू में सिनेमा—घर का उद्घाटन में करा देना चाहता हूँ...अब चलिए आप लोग। मकान में आकर डायरेक्टर ने मैनेजर से कहा—अब मैं बाथ लूंगा। बाथरूम में पानी भरवा दें।</p>

<p>—ठीक है, आप चलिए,—मैनेजर ने कह दिया।</p>

<p>डायरेक्टर अन्दर चला गया, तो मैनेजर ने चपरासी से कहा—बाथरूम में किसी से पानी भरवा दो और वहां साबुन, तेल, कंघा और तौलिया रखो। पानी भर जाए तो साहब से स्नान करने के लिए कह देना।</p>

<p>चपरासी चला गया, तो मैनेजर, कैशियर, स्टेनो और सरल कार्यालय में आकर अपनी-अपनी जगह बैठ गये। कैशियर ने कैश-बाक्स खोलते हुए मैनेजर से पूछा—अभी छोटे मैनेजर का हिस्सा नहीं लगेगा न? </p>

<p>—नहीं, इनका अगले हफ्ते से लगेगा,—मैनेजर ने बताया—अभी तो हम तीन का और नौकर-चाकरों का ही हिस्सा लगेगा।</p>

<p>—अच्छा, तो आप जरा मेरे पास आकर बैठें,—कैशियर ने कहा। मैनेजर उसके सामने जाकर बैठ गया, तो कैशियर ने फुसफुसाकर कहा—आज कुल पांच हजार एक सौ अस्सी मिले हैं। हम पन्द्रह-पन्द्रह सौ ले लें और बाकी नौकर-चाकरों में बांट दें, ठीक है न? </p>

<p>—डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अन्तर्गत जिले की सभी सड़कें हैं,—आफताब ने बताया—प्राइमरी स्कूल और मिडिल स्कूल हैं, अस्पताल हैं, डाक बंगले हैं। इनके कार्यों के संचालन के लिए विभागीय कमेटियां बनती हैं, जिनके सदस्य डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर ही होते हैं। हर कमेटी का एक चेयरमैन होता है। ये कमेटियां अपना-अपना बजट बनाती हैं। शिक्षा कमेटी, स्वास्थ्य कमेटी, निर्माण कमेटी, टैक्स कमेटी आदि कामधेनु की तरह होती हैं, इनके सदस्य जितना दुह

सकते हैं, दुहते हैं और मालामाल हो जाते हैं। खैर, छोड़ो यह-सब जिनका जो धन्धा है, करते हैं। तुम कह रहे थे मंझली भाभी को पढ़ाने की बात। तो क्या तुम्हारा कार्यक्रम कितने दिनों तक गांव में रहने का है? </p>

<p>जब तक मंझली भाभी पूर्णरूप से स्वस्थ नहीं होतीं, तब तक रुकूंगा ही। इस बीच उन्हें मैं इस योग्य बनाने की कोशिश करूंगा कि वे चिट्ठी लिखने लगें और कहानी-उपन्यास पढ़ने लगें। जब वे स्वस्थ हो जाएंगी, तो मैं उन्हें यह समझाकर उनसे विदा लूंगा कि मैं बराबर उन्हें चिट्ठी लिखूंगा और वे मेरी चिट्ठी का जवाब देंगी। इस तरह हमारे बीच बराबर संवाद और सम्पर्क बना रहेगा और उन्हें यह महसूस न होगा कि मैं उनसे दूर या अलग हूं। मैं उन्हें घर के कड़े कामों, रसोई, चक्की-जांते, ओखल-मूसल के कामों से छुट्टी दिला दूंगा। ये काम माई जैसे अब भी कभी गांव की मजदूरियों से कराती हैं हमेशा करा लिया करेंगी। माई इन औरतों की हमेशा मदद करती हैं। कोई औरत उसकी बात नहीं टालती। मंझली भाभी हल्के काम, सब्जी काटने का, चावल-दाल धोने का, आटा गूंथने का, बर्तन मांजने का, झाड़ू देने का कर देंगी। बाकी समय मैं पढ़ेंगी। मैं उनके लिए किताबें और पत्रिकाएं भेजता रहूंगा। यह मेरा कार्यक्रम है। देखो, सफलता मिलती है कि नहीं। तुम एक काम कर सकते हो? </p>

<p>बोलो,—आफताब ने उदास होकर कह दिया।</p>

<p>तुम्हारी बिरादरी में कुछ लोग ट्यूटर तो रखते हैं,—सरल ने कहा।</p>

<p>हां, रखते तो हैं,—आफताब ने बताया—इस्लामिया स्कूल और प्राइमरी स्कूल के अध्यापक उनके यहां ट्यूशन करते हैं।</p>

<p>आज-कल तो स्कूलों की छुट्टी है, अध्यापक आते नहीं,—सरल ने कहा—क्या वे लोग इस बीच मुझसे ट्यूशन ले सकते हैं? </p>

<p>क्या बात करते हो?—चकित होकर आफताब ने बताया—वे दो-दो, तीन-तीन रुपये फीस देते हैं। तुम्हारा क्या बनेगा उससे? </p>

<p>कुछ तो बनेगा,—सरल ने कहा—बड़े भैया को सन्तोष तो रहेगा कि मैं कुछ कर रहा हूं। यों भी आज-कल मेरे पास समय है। विद्या-दान का उद्देश्य क्या केवल पैसा ही होना चाहिए? तुम बात करो।</p>

<p>मुझे संकोच होता है,—आफताब ने कहा।</p>

<p>संकोच की कोई बात नहीं,—सरल ने बताया—मेरे-जैसा ट्यूटर उन्हें कहां मिलेगा। वे बहुत खुश होंगे। तुम बात करो। छुट्टी में कुछ लड़के, जो बाहर पढ़ते हैं ऊंची कक्षाओं में, वे

भी आये हैं। उनके अभिभावकों से भी बात करो। तुम्हें अकेले संकोच होता है, तो मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ।</p></div>

<p>—अच्छा,—आफताब ने स्वीकार कर लिया—आज शाम को चलेंगे।</p></div>

<p>—हां,—मंझली भाभी बोली।</p></div>

<p>—तो चलो, अब आराम करो,—सरल ने कहा—मैं अब जाऊं? </p></div>

<p>—कहां?—मंझली ने पूछा—तुम आराम नहीं करोगे? </p></div>

<p>—करूंगा,—सरल ने बताया—आराम करने के बाद ही कस्बे जाऊंगा, जैसे रोज जाता हूँ।</p></div>

<p>—मैं थोड़ी देर तक तुम्हें पंखा झल दूँ?—मंझली ने ललककर पूछा—अब तो मैं ठीक हूँ।</p></div>

<p>—नहीं, अभी नहीं,—सरल ने मुस्कराकर कहा—अभी खाने के बाद तुमको भी आराम करना जरूरी है। फिर अब कोई वैसी गर्मी नहीं पड़ रही है। चलो, तुम आराम करो।</p></div>

<p>कहकर सरल चल पड़ा।</p></div>

<p>मंझली के मन की खलबली फिर शुरू हो गयी। चिट्ठी में क्या होगा? उसने लिफाफा उठाया, लेकिन फिर उसे तुरन्त तकिये के नीचे रख दिया। राजकुमार आराम करने के बाद ही पढ़ने को कह गया है। राजकुमारी उसके आदेश का उल्लंघन नहीं कर सकती। पहले आराम। फिर कुछ। आखिर चिट्ठी में होगा ही क्या? वह मेरा इम्तिहान ही लेना चाहता है न? मैं जरूर पास हूँगी। अब मैं बहुत-कुछ पढ़-लिख सकती हूँ।</p></div>

<p>फिर भी वह रोज की तरह निश्चिन्त सो न सकी। बस, लेटी रही। आखिर नौकरानी आकर जब बर्तन-भांडे आंगन में बजाने लगी, तो वह उठ बैठी। बड़ी भाभी ने उसे बैठे देखा, तो बोली—आज जल्दी ही उठ गयी। चलो, हाथ मुंह धोओ। दूध गरम कर दूँ।</p></div>

<p>—अभी नहीं,—तकिये के नीचे से घड़ी निकालकर, समय देखकर मंझली बोली—अभी तीन ही बजे हैं। चार बजे दूध लेती हूँ न! </p></div>

<p>—ठीक है,—बड़ी भाभी बोलीं—तब तक थोड़ा और लेट लो।</p></div>

<p>लेकिन फिर लेटने के लिए मंझली नहीं उठी थी। उसने लिफाफा खोलकर पढ़ना शुरू किया :</p></div>

<p>मेरी बहुत-बहुत प्यारी राजकुमारी, हमेशा हंसती रहो।</p>

<p>तुम्हारी हँसी जाकर लौट आयी। मैं कितना खुश हूँ, बता नहीं सकता! मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा इसी तरह हंसती रहो। तुम्हारा मुख कभी भी मलिन न हो, तुम कभी भी उदास न होओ!</p>

<p>हमारा यह शरीर भी एक मशीन की तरह है। जिस तरह एक कुशल कारीगर अपनी मशीन पर बराबर ध्यान रखता है, उसी तरह हमें भी अपने शरीर का बराबर ध्यान रखना चाहिए। तभी हमारा शरीर निरोग रहेगा। लेकिन हमारी कुछ ऐसी मजबूरियाँ हैं, जिनसे हम लाचार होते हैं, विशेषकर हमारे-जैसे परिवार की औरतों की मजबूरियाँ तो अनगिनत हैं। हमारे परिवारों में मर्दों के रहन-सहन और खान-पान औरतों के रहन-सहन और खान-पान में बड़ा फर्क है। मर्द घर के बाहर काम करते हैं, उन्हें साफ हवा और धूप मिल जाती है। लेकिन औरतों को घर की चारदीवारी के अन्दर पर्दे में रहकर काम करना पड़ता है। उन्हें न धूप मिलती है और न ताजी हवा मिलती है।</p>

<p>आप लोग लड़कियों को बैठने कि लिए बोरा, चटाई या कथरी जो हो, और एक पटरी और दे देने की कृपा करें। कोई फीस नहीं लगेगी। सभी बिरादरियों, गरीबों-अमीरों की लड़कियाँ स्कूल में पढ़ेंगी। हिन्दी-उर्दू दोनों भाषाएं पढ़ाई-लिखाई जाएंगी। शुरू में मैं ही पढ़ाऊंगा फिर कोई मास्टरनी रख ली जाएगी।</p>

<p>आशा है, आप लोग यह बात कहने की स्वतंत्रता लेने के लिए मुझे क्षमा करेंगे। मैं इस अवसर को खोना नहीं चाहता था।</p>

<p>अन्त में मैं फिर एक बार काशीनाथ बाबू को बधाई देता हूँ और इनके भविष्य की शुभकामनाएं करता हूँ। धन्यवाद!</p>

<p>तालियों की गड़गड़ाहट से सभा गूँज उठी।</p>

<p>मंझले भैया हतप्रभ-से होकर ताकते रह गये। लाला और काशीनाथ के मुँह भी कुछ लटक गये। फिर काशीनाथ उठकर बोला—</p>

<p>आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मान्य अग्रजों तथा प्यारे भाइयों!</p>

<p>आप लोगों की बधाइयों, मुबारकबादों, आशीर्वादों और दुआओं के लिए धन्यवाद, शुक्रिया! मैं प्रयास करूंगा कि आप लोगों की आशाओं के अनुकूल मेरा जीवन बने। मैं इंजीनियर हूँ, मैं गांव में रहकर तो कोई काम कर नहीं सकता। फिर भी मैं आप लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि गांव के विकास, उन्नति के लिए जो भी काम होगा, उसमें मैं भरसक सहायता

करूंगा। मैं भी इस गांव से उतना ही प्यार करता हूं, जितना सरल बाबू करते हैं, क्योंकि मैं भी इसी गांव का पुत्र हूं। सरल बाबू जो लड़कियों के लिए स्कूल खोल रहे हैं, उसके लिए भी मुझसे जो सम्भव होगा, मैं सहायता करूंगा। अभी मैं पिताजी से अनुमति लिये बिना ही यह ऐलान करता हूं कि स्कूल में लड़कियों के बैठने के लिए टाट की और एक ब्लैक बोर्ड की व्यवस्था पिताजी कर देंगे। साथ ही गरीब लोगों की लड़कियों के लिए किताबें भी देंगे। सरल बाबू से मेरा निवेदन है कि वे पिताजी से इस सम्बन्ध में बात कर लें।</p></div>

<p>सरल बाबू ने जो हार-जीत की बात कही है, उसके सम्बन्ध में भी कुछ कहना मैं आवश्यक समझता हूं। लड़कपन की बातें हैं, जब समझ नाम की कोई वस्तु नहीं होती। मैं समझता था कि मैं एक धनी-मानी परिवार का हूं, मुझे सभी सुविधाएं प्राप्त हैं, मेरे समक्ष सरल की जो एक साधारण परिवार का है, क्या हैसियत है कि वह मेरा मुकाबिला करेगा? लेकिन अब मैं कह सकता हूं कि सरल के पास, सारी असुविधाओं के बावजूद, वह वस्तु थी, जो मेरे पास, सारी सुविधाओं के रहते हुए भी, नहीं थी। सरल को भगवान ऐसी प्रतिभा, तीव्र बुद्धि तथा परिश्रम करने की असीम ऊर्जा प्रदान की है कि वह सदा सभी कक्षाओं में शीर्ष स्थान प्राप्त करता रहा। और मैं एक साधारण विद्यार्थी ही बना रहा। उससे मेरी कोई तुलना हो ही नहीं सकती। मैं तृतीय और द्वितीय श्रेणी के आगे कभी भी न जा सका। अब आप ही बताइए जीत किसकी हुई? सरल की कि मेरी? </p></div>

<p>सरल बाबू ने जो यह कहा कि अन्ततः मैं जीत गया, यह सही नहीं है, क्योंकि मैं तो अपनी मंजिल पर पहुंच गया, लेकिन सरल बाबू अभी चल ही रहे हैं। अन्ततः ये किस मंजिल पर पहुंचेंगे, अभी कोई नहीं कह सकता। किन्तु इनमें जो अद्भुत प्रतिभा है, उसे देखते हुए मैं कह सकता हूं कि ये निश्चय ही एक दिन किसी बहुत बड़े पद पर आसीन होंगे। उस दिन मैं जहां भी होऊं आकर स्वयं गांव में ऐसी ही एक अभिनन्दन सभा का आयोजन करूंगा और हम—सब इन्हें बधाइयां देंगे।</p></div>

<p>इसकी रक्षा मैं करूंगी और जो भी तुम मुझे बनाना चाहते हो, बनने की पूरी कोशिश करूंगी। बस, अब तुमसे एक ही निवेदन है....—कहकर मंझली अचानक चुप होकर मुस्करायी।</p></div>

<p>—बोलो-बोलो!—सरल ने उत्सुक होकर कहा—मुझसे कैसा संकोच? </p></div>

<p>—मैं पहले जैसे तुम्हारी, सेवा करती थी, तुम्हारे खान-पान पर ध्यान देती थी,—मंझली सिर झुकाकर बोली—अब वैसे ही सब मुझे करने दो। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूं।</p></div>

<p>सुनकर सरल हंस पड़ा। फिर कुछ सोचकर उसने कहा—सुनो, राजकुमारी, तब की बात और थी और अब की बात और है। तब मैं लड़का था, छुट्टियों में घर आता था और मेहमान की तरह रहता था। तुम मेहमान की ही तरह मेरा सत्कार-सेवा करती थी और मैं खुशी से

स्वीकार करता था। अब तो मैं हमेशा के लिए घर आ गया हूँ और पूरा जवान हो गया हूँ। फिर मुझे कोई कष्ट नहीं है। जैसे सब रहते-सहते, खाते-पीते हैं, वैसे ही मैं भी रहूँ-सहूँगा और खाऊँ-पीऊँगा। एक मेरे लिए तुम कुछ विशेष करो, क्या यह अच्छा लगेगा? नहीं, राजकुमारी अब मुझे उस सबकी कोई जरूरत ही नहीं है। यों ही तुम बहुत काम कर रही हो। खामखाह के लिए मेरे लिए तुम अपना वक्त क्यों खराब करो।</p></p>

<p>—नहीं,—मंझली फिर भी बोली—मेरा वक्त खराब नहीं होगा। मुझे जो खुशी मिलेगी, जरा तुम उसकी सोचो। मेरी देवरानी यहां होती, तो मैं तुमसे यह निवेदन न करती। लेकिन वह है नहीं, कभी आएगी भी, तुम जानो। मुझे रह-रहकर लगता है, सब-कुछ होते हुए भी तुम अकेले पड़ गये हो। तुम्हारे दोस्त भी तुमसे बिछुड़ गये हैं। ऐसे मैं मैं भी तुम्हारा ध्यान न रखूँ, तुम्हारे साथ बैठकर कुछ देर हँसूँ-बोलूँ नहीं, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। मेरे मन को दुख होता है कि जिसने मेरे लिए इतना-सब किया, मैं उसके लिए कुछ न करूँ, यह कैसी बात है। काम काम है, जिन्दगी जिन्दगी है, बिना हँसी-खुशी के जिन्दगी क्या? मुझे हँसे हुए कितने दिन हो गये! </p></p>

<p>—हम इस विषय में फिर कभी बातें करेंगे,—सरल ने कहा। फिर बताया—आज मेरा मन कुछ खिन्न-सा है।</p></p>

<p>—क्यों, क्या हुआ?—उत्कंठित होकर मंझली ने पूछा।</p></p>

<p>—जाने दो,—सरल ने टालने के लिए कह दिया। उसे अफसोस हो रहा था कि यह बात उसके मुंह से कैसे निकल गयी।</p></p>

<p>—नहीं-नहीं, मुझे बताओ,—मंझली ने चिन्तित स्वर में कहा—मुझे भी नहीं बताओगे? </p></p>

<p>मंझली अब मानेगी नहीं, यह समझकर सरल ने अपने मन की बात बता दी—मेरे मन में आज एक भय समा गया है कि मंझले भैया हमारे परिवार को किसी दिन संकट में न डाल दें। ऐसा मुझे पहले कभी भी न लगा था।</p></p>

<p>—क्यों?—मंझली तमतमाकर बोली—वे हमारे परिवार को संकट में डालेंगे, तो सबसे पहले मैं उनसे लड़ूँगी।</p></p>

<p>—नहीं-नहीं, राजकुमारी,—सरल ने उसे शान्त करने के लिए कहा—हमारा सम्बन्ध लड़ने-झगड़ने का नहीं है। वे... </p></p>

<p>—मेरे सामने तुम फिर कभी उनका जिक्र न करना, समझे?—धिराकर मंझली झमककर उठी और पांव पटकती अन्दर चली गयी।</p></p>

</body></text>
</Doc>